ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-3* April- 2020
Innovation The Research Concept

आतंकवाद की जड़ छोटे हथियार

Small Arms: The Root of terrorism

कमलेश चन्द्र पाण्डेय
पोस्ट डॉक्टोरल फैलो
रक्षा, स्त्रॉतेजिक एवं भू राजनीतिक अध्ययन विभाग,
बिड़ला परिसर,
हे0नं0ब0ग0केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

Paper Submission: 5 /04/2020
Date of Acceptance: 23/04/2020
Date of Publication: 30/4/2020

सारांश

संपूर्ण विश्व में चाहे वह विकसित देश हो, विकासशील या अविकसित आतंकवाद सभी जगह किसी न किसी रूप में विद्यमान है। अतः हम कह सकते हैं कि आतंकवाद ने सम्पूर्ण दुनिया को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया है जो कि मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए नासूर बन चुका है। वैश्विक स्तर पर महा शक्तियों द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से हस्तक्षेप किया गया जो कि आतंकवाद को विस्तार देने वाला साबित हुआ। परिष्कृत एवं घातक हथियारों की उपलब्धता आधुनिक समय में आतंकवाद को जन्म देने में एक महत्वपूर्ण कारक रही है जिसके कारण न केवल आतंकवाद को बढ़ावा मिला बल्कि आतंकवादियों की कार्यवाही कहीं अधिक हिंसक होती चली गई। विश्व के कई देश हैं जिन्होंने आधुनिकतम हथियारों का उत्पादन एवं उनका व्यापार एक धंधा बना लिया है। इन देशों से हथियार प्रायः हथियारों का अवैध धंधा करने वाले संगठनों के पास पहुंच जाते हैं और इन संगठनों के द्वारा हथियारों को आतंकवादी संगठनों तक पहुंचा दिया जाता है। आतंकवादी संगठनों के द्वारा अत्याधुनिक हथियारों का प्रयोग किया जाता है जिसमें एके–47, टी–56 राइफल, आरडीएक्स विस्फोटक, कार्बाइन, स्ट्रिंगर मिसाइलें, हल्के हद गोले छोटे रॉकेट लॉन्चर व मोबाइल फोन बम आदि घातक हथियार मौजूद हैं। इन हथियारों के अतिरिक्त सर्वाधिक खतरनाक हथियार मनुष्य को बम के रूप में प्रयोग करना है जिसे मानव बम कहा जाता है।छोटे हथियार और हल्के हथियार तेजी से दुनियाभर में कई आतंकवादी समूहों के पसंदीदा हथियार बन रहे हैं क्योंकि ये सस्ते और आसानी से उपलब्ध होने वाले, लाने–ले जाने, छिपाने और इस्तेमाल करने में सुविधाजनक हथियार हैं।'ऐसा कहा जाता है कि अवैध छोटे हथियारों और हल्के अस्त्र–शस्त्रों की तस्करी समेत आतंकवाद और संगठित अपराध के बीच संबंध अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है और यह सतत विकास में बाधा है। आतंकवाद को बढ़ाने में छोटे हथियारों ने एक कारक का काम किया है। इस कार्यवाही में कतिपय देशों जैसे– पाकिस्तान में अवैध रूप से बनने वाले छोटे हथियारों के कारखानों की भूमिका प्रमुख है।

All over the world, whether it is a developed country, developing or underdeveloped terrorism exists everywhere in one way or the other. Therefore, we can say that terrorism has taken the entire world in its grip, which has become a canker for the survival of human civilization. Globally, the South Asian nations intervened politically and economically to fulfill their interests, which proved to be an extension of terrorism. The availability of sophisticated and lethal weapons has been an important factor in giving rise to terrorism in modern times, which not only gave rise to terrorism, but the actions of terrorists became more violent. There are many countries in the world which have made the production and trade of modern weapons a business. Weapons from these countries often reach out to illegal arms trade organizations and through these organizations, weapons are passed on to terrorist organizations. State-of-the-art weapons are used by terrorist organizations, which include AK-47, anti-56 rifles, RDX explosives, carbines, stringer missiles, light range shells, small rocket launchers and mobile phone bombs. Apart from these weapons, the most dangerous weapon is to use man as a bomb which is called a human bomb. Small arms and light weapons are fast becoming the preferred weapons of many terrorist groups around the world as they are cheap and easily available, easy to carry, carry and conceal and use. 'It is said that illegal small The relationship between terrorism and organized crime, including smuggling of arms and light weapons, is a serious threat to international peace and security and They hinder sustainable development. Small arms have acted as a factor in increasing terrorism. Small arms factories illegally built in some countries such as Pakistan play a major role in this action.

मुख्य शब्द : आतंकवाद, छोटे हथियार, ए0के–47, संगठन।
Keywords: Terrorism, small arms, ak-47, organization.

प्रस्तावना

मानव जाति के इतिहास में आतंकवादी गतिविधियों का गठजोड़ आरंभ से ही जुड़ा है। सिर्फ उनके स्वरूप साधन और लक्ष्यों में समय–समय पर बदलाव आता चला गया। बीसवीं शताब्दी के समय और अब 21वीं शताब्दी में कुछ विशेष स्थितियों में ऐसे सामान्य नागरिकों द्वारा आतंक के जरिए विनाश की लीला की गई जिन्हें युद्ध का कोई अनुभव ही नहीं था।[1] पिछले कुछ दशकों में अनेक मुस्लिम बहुल देशों में इस्लाम के कट्टरपंथी उग्रवादियों का दुष्प्रभाव प्लेग की तरह फैला है। ईरान में अयातुल्ला खुमैनी ने सन् 1979 में धार्मिक क्रांति के बाद धार्मिक शासन स्थापित किया। इस्लाम के कट्टरपंथी उग्रवादियों ने आज अनेक ऐसे स्वयंसेवी तैयार किए हैं जो बिना प्रश्न पूछे इस्लाम के नाम पर आत्मघाती हमले करते हैं। ऐसे ही कुछ उग्रवादी संगठन इस्लाम का साम्राज्य हथियारों की नोक पर स्थापित करना चाहते हैं।[2] संपूर्ण विश्व में चाहे वह विकसित देश हो, विकासशील या अविकसित आतंकवाद सभी जगह किसी न किसी रूप में विद्यमान है। अतः हम कह सकते हैं कि आतंकवाद ने सम्पूर्ण दुनिया को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया है जो कि मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए नासूर बन चुका है। आतंकवाद शब्द का प्रयोग सन् 1931 में ब्रुसेल्स में दंड विधान को समेकित करने के लिए बुलाए गए तीसरे सम्मेलन में किया गया था जिसके अनुसार आतंकवाद का अभिप्राय जीवन, भौतिक अखंडता अथवा मानव स्वास्थ्य को खतरे में डालने वाला या बड़े पैमाने पर संपत्ति को हानि पहुंचाने वाला कार्य करके जानबूझकर भय का वातावरण उत्पन्न करना है। साधारणतया आतंकवाद से अभिप्राय आतंक उत्पन्न करने के पीछे किसी संगठन या समूह का निश्चित लक्ष्य गुप्त कार्यवाहीयों द्वारा प्राप्त करना होता है, यह लक्ष्य व्यक्तिगत, धार्मिक, राजनीतिक या आर्थिक हो सकता है।[3]

वैश्विक स्तर पर महा शक्तियों द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से हस्तक्षेप किया गया जो कि आतंकवाद को विस्तार देने वाला साबित हुआ। अफगानिस्तान में सोवियत संघ के प्रवेश (सन् 1979) और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप अमेरिकन पाकिस्तान की संयुक्त सेनाओं द्वारा सोवियत संघ का प्रतिरोध, तालिबान का उदय तत्पश्चात् अमेरिका पर हमला और अमेरिका द्वारा तालिबान के खिलाफ जंग जैसे घटनाक्रम ने दक्षिण एशिया को आतंकवाद का केंद्र बिन्दु बना दिया।[4] परिष्कृत एवं घातक हथियारों की उपलब्धता आधुनिक समय में आतंकवाद को जन्म देने में एक महत्वपूर्ण कारक रही है जिसके कारण न केवल आतंकवाद को बढ़ावा मिला बल्कि आतंकवादियों की कार्यवाही कहीं अधिक हिंसक होती चली गई। विश्व के कई देश हैं जिन्होंने आधुनिकतम हथियारों का उत्पादन एवं उनका व्यापार एक धंधा बना लिया है। इन देशों से हथियार प्रायः हथियारों का अवैध धंधा करने वाले संगठनों के पास पहुंच जाते हैं और इन संगठनों के द्वारा हथियारों को आतंकवादी संगठनों तक पहुंचा दिया जाता है। वस्तुस्थिति यह है कि हथियारों का व्यापार करने वाले संगठनों का आतंकवादी संगठनों के बीच निकट का रिश्ता रहता है, जिससे दोनों एक दूसरे के हितों की पूर्ति करते हैं। यही कारण है कि कोई भी आतंकवादी संगठन उत्पन्न होता है और कुछ समय बाद ही उनके पास आधुनिकतम हथियार पहुंच जाते हैं। इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की कमी नहीं है जो कि इन हथियारों के संचालन का प्रशिक्षण देने के लिए तैयार रहते हैं। इस संबंध में यह महत्वपूर्ण है कि विज्ञान और प्रोद्योगिकी की प्रगति के कारण जैसे–जैसे नए हथियारों की खोज होती गई वैसे–वैसे उसका लाभ आतंकवादी संगठनों को भी मिलता रहा है। इसके कारण आतंकवादी संगठनों की मारक क्षमता में भी वृद्धि हुई है। यहां तक कि कुछ देशों की सुरक्षा बलों के पास उतने आधुनिक अस्त्र–शस्त्र नहीं होते जितने कि आतंकवादी संगठनों के पास इनकी उपलब्धता है।[5] आतंकवादी संगठनों के द्वारा अत्याधुनिक हथियारों का प्रयोग किया जाता है जिसमें एके–47, टी–56 राइफल, आरडीएक्स विस्फोटक, कार्बाइन, स्ट्रिंगर मिसाइलें, हल्के हद गोले छोटे रॉकेट लॉन्चर व मोबाइल फोन बम आदि घातक हथियार मौजूद हैं। इन हथियारों के अतिरिक्त सर्वाधिक खतरनाक हथियार मनुष्य को बम के रूप में प्रयोग करना है जिसे मानव बम कहा जाता है। आतंकवादी संगठन कुछ व्यक्तियों को इस प्रकार प्रशिक्षित करते हैं जो स्वयं अपने जीवन को किसी बड़े उद्देश्य को पूरा करने के लिए कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मानव बम एक ऐसा हथियार है, जिसका समाधान विश्व की किसी भी सुरक्षा एजेंसी सरकार और सेना के पास अब तक नहीं है। 11 सितंबर 2001 को अमेरिका पर हुए आत्मघाती हमलों का पता लगाने में अमेरिका का खुफिया तंत्र भी असफल रहा जबकि वहां का खुफिया तंत्र विश्व का सर्वोत्तम खुफिया तंत्र माना जाता है। इस हमले में हजारों लोग मारे गए थे तथा करीब 20 अरब डालर की संपत्ति नष्ट हो गई जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद के लगभग आधे के बराबर थी। विश्व में करीब 75 से अधिक आतंकवादी संगठनों के पास मानव बम मौजूद है। इस सूची में श्रीलंका के आतंकवादी संगठन लिट्टे का नाम सबसे ऊपर था, जिसमें 250 मानव बम कार्यवाही हेतु तैयार रहते थे। सन् 1980 से 2000 तक के 20 वर्षों में 275 मानव बमों का प्रयोग किया गया जिसमें 168 बार सबसे ज्यादा इसका प्रयोग लिट्टे ने किया था। उसके बाद हिज्बुल्लाह एवं सीरिया समर्थित आतंकवादी संगठन इस्लामी जेहादी ने इन वर्षों में 52 बार मानव बमों का इस्तेमाल किया।[6]

इंस्टिट्यूट ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पीस (IEP)द्वारा जारी वैश्विक आतंकवाद सूचकांक 2014 बताता है कि वर्ष 2013 में आतंकवादी घटनाओं में मरने वालों की संख्या 61 फीसदी थी और आतंकी हमलों की संख्या में तकरीबन 44 फीसद का इजाफा हुआ था। इसमें यह भी खुलासा किया गया था कि दुनिया में आतंकवाद की तकरीबन 82 फीसद घटनाएं महज पांच देशों यथा इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नाइजीरिया और सीरिया में घटी थी। इन देशों में आतंकवाद से भी ज्यादातर मौतों के लिए आईएस,बोका हरम, तालिबान और अलकायदा जिम्मेदार रहे। चिंता की बात यह है कि आतंकवाद से

सर्वाधिक प्रभावित देशों की सूची में उपरोक्त 5 देशों के ठीक बाद छठे पायदान पर भारत को रखा गया था।[7] नवंबर, 2019 में इंस्टीट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस द्वारा वैश्विक आतंकवाद सूचकांक 2019 जारी किया गया। इस सूचकांक के निर्माण में 163 देशों में आतंकवादी गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययन करके आतंकवाद और उसके प्रभाव का तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस सूचकांक में आतंकवाद के प्रभाव को मापने के लिए चार संकेतकों–मौतों की तथा आतंकवाद के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का उपयोग किया गया है। इस सूचकांक में शून्य से 10 तक के स्कोर में 163 देशों को श्रेणीबद्ध किया गया है। सूचकांक में स्कोर शून्य (0) का मतलब सबसे कम और दस (10) सबसे अधिक आतंकवाद से प्रभावित होने से है। आतंकवाद से सबसे प्रभावित देशों के इस सूचकांक में अफगानिस्तान (स्कोर–9.603) शीर्ष स्थान पर है। इसके पश्चात इराक (स्कोर–9.241) दूसरे, नाइजीरिया (स्कोर–8.597) तीसरे, सीरिया (स्कोर–8.006) चौथे तथा पाकिस्तान (स्कोर–7.889) पांचवें स्थान पर रहा। वैश्विक आतंकवाद सूचकांक–2019 में भारत (स्कोर–7.518) को सातवां स्थान प्राप्त हुआ है। इस सूचकांक में भारत के पड़ोसी देशों में बांग्लादेश को 31वां, नेपाल को 34वां, चीन को 42वां, श्रीलंका को 55वां तथा भूटान को 137वां स्थान प्राप्त हुआ है।विश्व के अन्य विकसित देशों में यूएसए 22वें, यू.के. 28वें, फ्रांस 36वें, रूस 37वें, इज़राइल 40वें तथा जर्मनी 44वें स्थान पर रहा।[8]

इस बात में कोई संदेह नहीं की आतंकवादी हमेशा सामूहिक विनाश के मौकों की तलाश में रहते हैं। इस समय कोविड–19 का प्रकोप समूचे विश्व में उनके लिए ऐसा ही एक अवसर है। वास्तव में, इंटरनेट पर फैली अफवाहों में कोविड–19 की उत्पत्ति का केंद्र वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी को बताया जा रहा है, जो कि घातक रोगाणुओं पर अध्ययन की एक सैन्य प्रयोगशाला है। अफवाहों को छोड़ भी दें तो आतंकवादी संक्रमित नागरिकों/आतंकवादियों के माध्यम से वायरस का आम आबादी में प्रसार कर सकते हैं और सुरक्षा बलों पर इसका दोष मढ़ सकते हैं। सेना को सैन्य ठिकानों तथा नियंत्रण रेखा की भीड़भाड़ वाली चौकियों पर कार्यरत कुलियों/मजदूरों में संक्रमण के माध्यम से भी लक्षित किया जा सकता है। भारतीय सुरक्षा बलों को प्रशासन की मदद से आम आबादी की रक्षा करने के साथ–साथ खुद को भी सुरक्षित रखना होगा। आतंकवादी कोविड–19 को लेकर स्वतः क्वारंटाइन/अलगाव जैसे सेना के ऐहतियाती उपायों का फायदा उठाते हुए नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ बढ़ाने और भीतरी इलाकों में विध्वंसक कार्रवाइयां करने की कोशिश कर सकते हैं। सेना के पास सावधानी बरतने और आतंकवाद विरोधी अभियानों की गति को बनाए रखने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। यदि आवश्यक हो, तो सैनिकों को रासायनिक व जैविक सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करना चाहिए।[9]

आतंकवाद विरोध के लिए संयुक्त राष्ट्र के अवर महासचिव व्लादिमीर वोरोन्कोव ने कहा, 'छोटे हथियारों और हल्के अस्त्र–शस्त्र की अवैध तस्करी के खिलाफ अपर्याप्त अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया और साथ ही कमजोर सीमाओं से आतंकवादियों तथा अपराधियों को एक देश या क्षेत्र से दूसरी जगह अवैध हथियारों को ले जाने में मदद मिलती है।' उन्होंने कहा, 'छोटे हथियार और हल्के हथियार तेजी से दुनियाभर में कई आतंकवादी समूहों के पसंदीदा हथियार बन रहे हैं क्योंकि ये सस्ते और आसानी से उपलब्ध होने वाले, लाने–ले जाने, छिपाने और इस्तेमाल करने में सुविधाजनक हथियार हैं।'ऐसा कहा जाता है कि अवैध छोटे हथियारों और हल्के अस्त्र–शस्त्रों की तस्करी समेत आतंकवाद और संगठित अपराध के बीच संबंध अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है और यह सतत विकास में बाधा है। वोरोन्कोव ने कहा कि बिना किसी कड़ी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के आतंकवादियों और अपराधियों के लिए अवैध अस्त्र–शस्त्रों को एक देश या क्षेत्र से दूसरे स्थान पर ले जाना आसान होगा।[10] पारंपरिक रूप से हथियारों के उपयोग में आतंकवादियों द्वारा हैंड ग्रेनेड और बंदूकें प्रयोग की जाती रही हैं। विशेषकर आत्मघाती हमलों में इनमें कार और ट्रक–बम बहुत शक्तिशाली हथियार बन गए हैं। आतंकवादी विस्फोटक बम और आग लगाने वाले बम विस्फोट दोनों का उपयोग करते हैं। वे पत्र और पार्सल बम का भी उपयोग करते हैं। आतंकवादी प्रायः हत्या, सशस्त्र हमलों और नरसंहारों में बंदूक, पिस्तौल, रिवाल्वर, राइफल और अर्द्ध स्वचालित हथियारों का उपयोग करते आ रहे हैं। जिसमें हथगोले से लेकर रॉकेट से चलने वाले ग्रेनेड भी आतंकी शस्त्रागार का हिस्सा हैं। मिसाइलों का उपयोग दुर्लभ है, लेकिन कुछ समूहों को सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों के कारण जाना जाता है जो हेलीकॉप्टर, लड़ाकू विमान और नागरिक विमानों को नीचे ला सकते हैं। आतंकवादियों द्वारा प्रयोग किए जा रहे कुछ प्रमुख हथियार निम्न हैं–

एके–47 (सोवियत राइफल)

सन् 1949 में एके–47 को सोवियत सेना के लिए मानक राइफल के रूप में स्वीकार किया गया था। शीत युद्ध के दौरान, यूएसएसआर ने पश्चिमी विद्रोही आतंकवादियों को हथियारों की आपूर्ति की। विश्व स्तर पर एके–47 की 30 से 50 मिलियन प्रतियों और विविधताओं के बीच उत्पादन किया गया है, जिससे यह दुनिया में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली राइफल है।

आरपीजी –7 (रॉकेट प्रोपेल्ड ग्रेनेड)

आरपीजी–7 को पूर्व सोवियत संघ, चीनी सेना और उत्तर कोरिया की सेनाओं द्वारा जारी किया गया था, और इसका उपयोग वारसा संधि के सदस्यों से हथियार और प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कई देशों में किया गया था। आरपीजी –7 एक बहुत ही सरल और कार्यात्मक हथियार साबित हुआ, जो निश्चित उत्सर्जन के खिलाफ प्रभावी और एक वाहन– विरोधी कवच की भूमिका में है। लक्ष्य के खिलाफ इस्तेमाल होने पर इसकी प्रभावी सीमा लगभग 500 मीटर मानी जाती है। यह लगभग 12 इंच की दूरी से कथित तौर पर पारंपरिक कवच प्लेट को भेद सकता है। मध्य–पूर्व और लैटिन अमेरिका में आतंकवादी संगठनों द्वारा बड़े पैमाने पर आरपीजी–7 का उपयोग

किया जा रहा है और इसे कई विद्रोही समूहों की सूची में माना जाता है। पूर्वी यूरोप और मध्य पूर्व में आरपीजी–7 अवैध अन्तर्राष्ट्रीय हथियारों के बाजारों में उपलब्ध है।

स्टिंगर

यूएस निर्मित स्टिंगर एक मानव–पोर्टेबल अवरक्त निर्देशित कंधे वाली सतह से हवा(एस ए एम)मिसाइल है। यह सोवियत हस्तक्षेप के खिलाफ विद्रोह के दौरान अफगान मुजाहिदीन छापामारों के हाथों में अत्यधिक प्रभावी साबित हुआ। इसकी अधिकतम प्रभावी सीमा लगभग 5,500 मीटर है। इसकी अधिकतम प्रभावी ऊंचाई लगभग 5250 मीटर है। इसका उपयोग उच्च गति जेट, हेलीकॉप्टर और वाणिज्यिक एयरलाइन को लक्षित करने के लिए किया जाता है।

एस ए–7 (Grail)

सोवियत संघ के विघटन के बाद हजारों लोगों द्वारा बेचा गया एस ए –7 ग्रेल एक ऑप्टिकल दृष्टि और ट्रैकिंग डिवाइस का उपयोग करता है, जो एक अवरक्त तंत्र की तलाश में बड़ी ताकत के साथ उड़ान लक्ष्यों पर प्रहार करता है। इसकी अधिकतम प्रभावी सीमा लगभग 6,125 मीटर है और अधिकतम प्रभावी ऊँचाई लगभग 4300 मीटर है। यह आतंकवादी और गुरिल्ला समूहों के भंडार में उपलब्ध है।[11] आतंकवादी समूह हथियारों की खरीद फरोख्त और रोजगार करते रहते हैं। उपरोक्त हथियारों के अलावा इनके पास टी 56, जी 3 जैसे मानक पैदल सेना के हथियारों की तुलना में उच्च मारक क्षमता और कम लागत लिए विशेषज्ञता और प्रौद्योगिकी के कारण पिछले दशक के दौरान विस्फोटक उपकरणों का प्रसार हुआ है। इन उच्च प्रभाव तकनीक उपकरणों का पता लगाना मुश्किल है और इसलिए आतंकवादी और गुरिल्ला समूहों का मुकाबला करना मुश्किल हो जाता है।[12]

छोटे हथियारों की प्राप्ति का एक स्रोत दर्रा आदमखेल

दुनिया का सबसे खतरनाक बंदूक मार्केट पाकिस्तान में पेशावर से 35 किलोमीटर दक्षिण में स्थित दर्रा आदमखेल में मौजूद है। कई साल तक इस इलाके पर तालिबान का कब्जा रहा। वहीं अब भी इस इलाके में सरकार का असर सीमित है। इस वजह से इस इलाके में बंदूकों को बनाने और बेचने का कारोबार जारी है। यहां के कारोबारियों का दावा है कि वे दुनिया की किसी भी बंदूक की नकल तैयार कर सकते हैं, जो असली गन से बेहतर काम करेगी। डॉन न्यूज के मुताबिक फिलहाल कारोबार में इन कॉपी की गई गन का हिस्सा ज्यादा है। यहां अमेरिकी एम 16 की चाइनीज कॉपी और लोकल कॉपी व ए0के0–47 की ओरिजनल और लोकल कॉपी दोनों ही मिलती हैं। अमेरिकी बरेटा हैंडगन की कॉपी, ग्लोक पिस्टल ओरिजनल और उनकी कॉपी आसानी से मिल जाती है। हथियारों के रेट कार्ड सिर्फ 5000 रुपए में ए0के0–47 आतंकवादियों तथा दर्रा आदमखेल के कारोबारियों का भी पसंदीदा हथियार है। इसे बेचना और बनाना दोनों ही आसान है। मार्केट में चोरी और तस्करी की गई ओरिजनल के साथ साथ लोकल कॉपी भी मौजूद है। यहां ए0के0–47 की ओरिजनल गन 800 डॉलर से 2000 डॉलर के बीच मिल जाती है। ये कीमत करीब 55 हजार से एक लाख चालीस हजार के बीच है। ए0के0–47 की ये नकली कॉपी 70 डॉलर से 250 डॉलर तक में खरीद सकते हैं। चीन में बनी यहां ऑस्ट्रियन सेमीआटोमैटिक पिस्टल ग्लॉक की कॉपी आसानी से मिल जाती है। इसकी कीमत 25 हजार रुपए के करीब है। इंटरनेशनल मार्केट में ओरिजन ग्लॉक इससे दस गुना से ज्यादा कीमत पर मिलेगी। इसके साथ ही सेंकेंड वर्ल्ड वार के हथियार भी यहां पुराने दुकानदारों के पास रखे हैं। ये गन मार्केट अफगानिस्तान की सीमा से ज्यादा दूर नहीं है। संघर्ष इस इलाके में आम हैं आतंकी समूह, इलाके के कबीले और पाकिस्तानी सेना की मौजूदगी स्थिति को नाजुक बनाते हैं। दुकानदारों के मुताबिक ये हथियार सेल्फ डिफेंस और शिकार के लिए इस्तेमाल होते हैं। सेना की सख्ती के बाद कारोबार घटा है लेकिन इससे अवैध कारोबार को बढ़ावा भी मिला है।[13]

वस्तुतः शीत युद्ध के दौरान, यूरोप में आतंकवाद की चुनौतियां अन्तर्राष्ट्रीय के विरोध में काफी हद तक घरेलू थीं। छोटे हथियार और उच्च विस्फोटक जैसे सेमटेक्स और सी–4 ने सक्रिय जातीय–राष्ट्रवादी आतंकवादी समूह जैसे यूनाइटेड किंगडम में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी, स्पेन में, बास्क अलगाववादी इटली में वामपंथी लाल ब्रिगेड और पश्चिम जर्मनी में मार्क्सवादी बाडार–मीन हॉफ गैंग आदि खतरनाक वैचारिक के शस्त्रागार की रचना की। कम तीव्रता के हथियार और विस्फोटक मुख्य रूप से शहरी अभियानों में समान उपयोगिता के थे जिसमें आतंकवादियों ने हिंसा को अपेक्षाकृत सीमित रखा और चयनात्मक तेजी से लक्ष्यीकरण किया। इसके अलावा, हथियार मुख्य रूप से यूरोप के बाहर से आए थे। उदाहरण के लिए सन् 1983 में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी के लिए हथियार मुख्य रूप से लीबिया से शिपमेंट द्वारा आए थे। वर्ष 2004 तक छोटे एवं हल्के हथियारों का उत्पादन अत्यधिक विकेंद्रीकृत हो गया लगभग 92 देशों में काम करने वाली 1,250 कंपनियों ने हथियार, पुर्जे और संबंधित गोला बारूद बनाया।[14] अफ्रीका महाद्वीप में नाइजर एक विशेषाधिकार प्राप्त देश है, जिसका कार्य साहेल के पार आतंकवादी गतिशीलता का निरीक्षण करना और उनके खिलाफ कार्रवाई करना है। यह देश क्षेत्रीय और पश्चिमी शक्तियों के लिए आतंकवाद–विरोधी रणनीतियों में एक प्रमुख भागीदार बन गया है। वर्ष 2015 तक आतंकवाद के खतरे से चिंतित, नाइजर में पहले बोको हरम द्वारा आतंकवादी हमलों में वृद्धि, और उसके बाद अल–कायदा इस्लामिक मगरेब से संबंधित समूहों द्वारा नाइजीरियाई लोगों के खिलाफ आतंकवादी हमलों में वृद्धि देखी गई। साहेल आतंकवादी समूह नाइजर को एक उपजाऊ मैदान पाते हैं और लंबे समय से सामुदायिक विभाजन का फायदा उठाते हैं, जो असुरक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं। नाइजर ने इस क्षेत्र में संघर्ष क्षेत्रों के लिए हथियार पहुंचाने के लिए एक महत्वपूर्ण पारगमन मार्ग के रूप में काम किया है, लेकिन देश की सुरक्षा स्थिति के बिगड़ने से हथियारों की विशेषकर छोटे हथियारों और गोला–बारूद के लिए घरेलू मांग में वृद्धि हुई है। पिछले पांच वर्षों में नाइजर में

आतंकवादियों से जब्त किए गए हथियारों में विस्फोटक, छोटे और हल्के हथियार, गोला–बारूद, जिनमें MANPADS, मशीन गन, और मोर्टार राउंड शामिल हैं। नाइजर के माली और नाइजीरिया में स्थित सक्रिय आतंकवादी समूह विभिन्न स्रोतों से सामग्री प्राप्त कर रहे हैं, जिसमें या तो राष्ट्रीय भंडार शामिल हैं या शस्त्रागार पर राज्य नियंत्रण नहीं है।[15] अनुसंधान द्वारा द स्माल आर्म्स सर्वे बताता है कि छोटे हथियारों के व्यापार का 10 से 20 प्रतिशत वे हथियार हैं जो मुख्य रूप से नागरिक संघर्ष और अपराध को बढ़ावा दे रहे हैं। कमजोर उत्पादन, निजी स्वामित्व पर नियम और अंतरराष्ट्रीय, क्षेत्रीय, भंडार प्रबंधन राष्ट्रीय और यहां तक कि स्थानीय स्तर पर, अवैध हस्तांतरण की सुविधा हथियारों की असुरक्षा को बढ़ा रहे हैं।[16] हाल के वर्षों में आग्नेयास्त्रों के साथ कई आतंकवादी हमले किए गए जैसे यूरोप में जिससे सैकड़ों लोगों की मौत हो गई और सैकड़ों लोग घायल हो गए। मार्च 2012 में एक युवा फ्रांसीसी ने तीन फ्रांसीसी सैनिकों और साथ ही तीन विद्यार्थियों को मार डाला। अन्य आतंकवादी हमलों में मई 2014 ब्रुसेल्स में यहूदी संग्रहालय पर फरवरी 2015 कोपेनहेगन और जनवरी/नवंबर 2015 में पेरिस जैसे शहरों में हाई–प्रोफाइल हमले शामिल हैं। हाल के हाई–प्रोफाइल आतंकवादी हमले इस्लामिक चरमपंथ से प्रेरित थे और मध्य पूर्व में इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया (ISIS) के रूप में जाने वाले नॉनस्टेट समूह के उथल–पुथल से जुड़े थे।[17]

वस्तुतः छोटे एवं हल्के हथियारों को जब्त करने संबंधी संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रम उतने प्रभावी नहीं हैं। क्योंकि छोटे एवं हल्के हथियारों का अधिकतम उत्पादन संयुक्त राष्ट्र के 05 स्थायी सदस्य देशों की हथियार निर्माण कम्पनियों के द्वारा किया जाता है। जिनमें से कुछ देशों के व्यवहार पर संदेह जाता है कि उनके द्वारा छोटे एवं हल्के हथियारों को प्रतिबंधित आतंकवादी/उग्रवादी संगठनों तक प्राप्त कराया गया। साथ ही छोटे एवं हल्के हथियारों का उत्पादन एवं क्रय–विक्रय, विकसित देशों की आर्थिकी का आधार एवं व्यवसाय है। उक्त तमाम परिस्थितियों से स्पष्ट है कि आतंकवाद को समाप्त करने का लक्ष्य विश्व शक्तियों की प्राथमिकता का विषय नहीं है। और यदि होता तो आज आतंकवाद का स्वरूप इतना विभत्स नहीं होता। आज आवश्यक्ता इस बात कि है की प्रत्येक देश आतंकवाद और इसको बढावा दे रहे कारक यथा छोटे एवं हल्के हथियारों के अवैध प्रसार के लिए स्वयं ही कोई ठोस नीति बनाए। एक स्वस्थ लोकतंत्र, सुशासन, निस्वार्थ/हितों का त्याग, नागरिकों की मूलभूत आवश्यक्ताओं की पूर्ति और रोजगार परक नीति आदि द्वारा आतंकवाद/उग्रवाद जैसे नासूर को जड़ से मिटाया जा सकता है। आतंकवाद/उग्रवाद के कारण राह भटक गए लोगों का विश्वास जितने की आवश्यक्ता है। उनके हाथों में हथियारों की जगह कलम की पकड़ को मजबूत बनाना और उनको आत्मसमर्पण हेतु प्रोत्साहित करना होगा।

हाल ही में भारत के असम राज्य में आठ प्रतिबंधित आतंकवादी/उग्रवादी संगठनों जैसे–उल्फा, एनडीएफबी, आरएनएलएफ, केएलओ, सीपीआइ (माओवादी), एनएसएलए, एडीएफ और एनएलएफबी के कुल 644 आतंकवादियों ने 177 हथियारों के साथ असम के मुख्यमंत्री सर्बानंद सोनोवाल की उपस्थिति में आत्मसमर्पण किया। इन आतंकवादियों ने एके–47 और एके–56 जैसे कई हथियार सरकार को सौंपे।[18]

06 मार्च 2000 के उपरान्त दक्षिण एशिया में आतंकवादियों/उग्रवादियों द्वारा प्रयोग में लाए गए छोटे एवं हल्के हथियारों से हुई जन हानि को अग्रलिखित तालिका से समझा जा सकता है–

Incidents of Killing	Civilians	Security Forces	Terrorist/Insurgent/ Extremist	Not Specified	Total
50377	48829	22337	89748	6014	166928

source: www.satp.org/southasia

अतः उपरोक्त तालिका के अवलोकन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में छोटे एवं हल्के हथियारों ने आतंकवाद/उग्रवाद की प्रवृत्ति को बढाने में अपनी भूमिका का निर्वहन किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः शोध पत्र के शीर्षक के आधार पर मैं यह कहना चाहूंगा कि सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र संघ आतंकवाद की ठोस परिभाषा को परिभाषित करने में अपना योगदान दे। साथ ही विश्व के प्रत्येक देश दी गई परिभाषा के आधार पर उसे अमल में लाने का प्रयास करें। वैश्विक स्तर पर महाशक्तियों द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किसी अन्य देश में राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से हस्तक्षेप न किया जाए। परिष्कृत एवं घातक हथियारों की आसान उपलब्धता पर पूरे विश्व समुदाय का ध्यान इस ओर केन्द्रित करने की आवश्यकता है। उन अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की पहचान करनी होगी जो छोटे एवं हल्के हथियारों के संचालन का प्रशिक्षण देने के लिए तैयार रहते हैं। नए हथियार एवं उसकी प्रौद्योगिकी आतंकवादी संगठनों या अवैध रूप से उत्पादन कर रहे कारीगरों के पास ना पहुंचे इसका भी ध्यान रखना चाहिए। मनुष्य को मानव बम बनाने के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को भी उजागर करने की आवश्यकता है। आतंकवादियों के पास नाभिकीय रासायनिक व जैविक हथियारों संबंधी प्रौद्योगिकी कि पहुंच सुलभ न हो सके इसका भी नियंत्रण अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को करना चाहिए। छोटे एवं हल्के हथियारों के अवैध उत्पादन उनके प्राप्ति के स्रोत और उनके अवैध प्रसार को रोकना चाहिए। विश्व में बन रहे अवैध रूप से छोटे हथियारों के कारखानों को समूल नष्ट करना होगा साथ ही उन देशों को चिन्हित करना होगा जो कि अवैध रूप से आतंकवादियों/ उग्रवादियों को अवैध छोटे हथियार उपलब्ध कराते हैं। एक स्वस्थ लोकतंत्र, सुशासन, नागरिकों की मूलभूत आवश्यक्ताओं की पूर्ति और रोजगार परक नीति आदि द्वारा आतंकवाद/उग्रवाद जैसी अमरबेल को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

अंत टिप्पणी

1. *गौड़ वीरेंद्र कुमार, विश्व में आतंकवाद(2012) पृ0 सं0 13*
2. *तदैव पृ0 सं0 14*
3. *गोयल डॉ अलका, दक्षिण एशिया में आतंकवाद (2013) पृ0 सं0 17*
4. *तदैव पृ0 सं0 91*
5. *सिंह जितेंद्र, दक्षिण एशिया में आतंकवाद की समस्या (2012) पृ0 सं0 48–49*
6. *तदैव पृ0 सं0 15–16*
7. *राष्ट्रीय सहारा देहरादून संस्करण 25 नवम्बर 2014*
8. *https://www.edristi.in/hi/वैश्विक-आतंकवाद-सूचकांक-2019/*
9. *https://hindi.theprint.in/opinion/terrorists-can-weaponise-coronavirus-armed-forced-extra-vigilant/125788/*
10. *https://navbharattimes.indiatimes.com/world/america/un-anti-terror-head-says-little-and-cheap-weapons-are-now-used-by-many-terrorist-organisations/articleshow/74255280.cms*
11. *https://www.unodc.org/images/odccp/terrorism_weapons_conventional.html*
12. *Terrorism and Small Arms and Light Weapons Rohan Gunaratna available at http://archive2.grip.org/ bdg/pdf/g3062.pdf*
13. *13. https://money.bhaskar.com/news/MON-MARK-STMF-gun-cheaper-than-budget-smart-phones-in-this-gun- market-business-news-hindi-5508044-PH.html*
14. *The Flow of Small Arms and Explosives to Terrorist Groups: EU Challenges and Remedies Jonathan Stevenson International Insititute for Strategic Studies available at file:///C:/Users/user/Downloads/2009-00-00%20The%20Flow%20of%20Small%20Arms%20and%20Explosives%20to%20Terrorist%20Groups.pdf*
15. *http://www.smallarmssurvey.org/about-us/highlights/2017/highlight-sana-niger.html*
16. *https://www.ipinst.org/wp-content/uploads/publications/salw_epub.pdf*
17. *https://www.flemishpeaceinstitute.eu/safte/files/vrede_syntheserapport_safte_lr.pdf*
18. *https://www.jagran.com/news/national-644-terrorists-surrender-along-with-177-arms-in-assam-19963918.html*